शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वच्छ भारत अभियान में कामकाजी महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन (इंदौर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

प्रतिभा मात्रे (शोधार्थी)
सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला
डॉ.बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
महू, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

देश के विकास में आधी आबादी अर्थात महिलाओं की अनदेखी और उपेक्षा होती रही है। यह गंभीर चिंता का विषय रहा है। महिलाओं को मुख्यतः उपयोगकर्ता या उपभोक्ता के रूप में देखा जाता है। हांलाकि महिलाओं ने अपने प्रति बनी अनेक धारणाओं को तोड़ा है और अपने कौशल से सफलता का स्पर्श किया है। स्वच्छ भारत मिशन में महिलाओं के योगदान का अवलोकन करने पर पाते हैं कि उनकी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छता में प्रथम पायदान पर आने वाले इंदौर के सन्दर्भ में स्वच्छ भारत अभियान में कामकाजी महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण (एसबीएम-जी) अभियान में महिलाओं का योगदान बिल्कुल चकित कर देने वाला रहा है। रूढियों को तोड़ने से लेकर अपने समुदायों के भीतर के पूर्वाग्रहों पर काबू पाने तक, उन्होंने अपने समुदायों के स्वास्थ्य एवं कल्याण से जुड़े मामलों में योगदान करते हुए सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विविध भूमिकाएं निभाई हैं।

महिलाओं ने शौचालयों के निर्माण के लिए रानी मिस्त्री, कचरे को इक्कठा करने, अलग करने और शोधित करने के लिए हरित राजदूत, सामुदायिक स्वच्छता परिसरों के संचालन और रख-रखाव के लिए प्रभारी, कोविड संबंधी उपयुक्त व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य प्रमोटर, साफ-सफाई और स्वच्छता से संबंधित सर्वोत्तम परम्पराओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए इंटरपर्सनल कम्युनिकेशन (आईपीसी) से संबद्ध पेशेवर स्वच्छता कार्य में संलग्न स्वच्छाग्रही, बर्तन बैंक शुरू करने या सैनिटरी नैपकिन बनाने वाले उद्यमी आदि के रूप में विभिन्न भूमिकाएं निभाई हैं। उनकी इन सभी भूमिकाओं से उनके गांवों को स्थायी लाभ पहुंचा है। उनका धैर्य एवं दृढ़ संकल्प और उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण उनके द्वारा बार-बार प्रदर्शित बहुमुखी प्रतिभा ने यह साबित किया है कि उचित प्रोत्साहन मिलने पर महिलाएं कुछ भी करने में सक्षम हैं। नए कौशल को हासिल करने, नए विचारों को अपनाने और खुद को सशक्त बनाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने को लेकर उनका रवैया अक्सर पर्याप्त रूप से अनुकूल होता है। वास्तव में हमारे गांवों की महिलाएं का कार्य सराहनीय है।

यहां इससे संबधित कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं, जो स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण में उनकी अपरिहार्य भूमिका को प्रदर्शित करते हैं :

गडग जिले में कूड़ा उठाने की कमान महिलाओं के हाथों में

कर्नाटक के गडग जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों (जीपी) में कचरा प्रबंधन की जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों की संजीवनी महिला स्वयं सहायता समूह को सौंपी गई है। यह ग्रामीण महिलाओं में आजीविका के वैकल्पिक स्रोत के रूप में निरंतन आय सुनिश्चित करती है। इन महिलाओं ने अपने सपने में भी यह कभी नहीं सोचा होगा कि वे ट्रक चलाकर पुरुषों के वर्चस्व वाले एक और क्षेत्र पर कब्जा जमायेंगी और समाज को अमूल्य सेवा प्रदान करेंगी।

बर्तन बैंकों के जरिए स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की महिलाओं ने एक फिर दिखाई अपनी क्षमता

छत्तीसगढ़ के महासमंद जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) ने बर्तन बैंक की शुरुआत के माध्यम से अपनी क्षमता दिखाई है। क्रॉकरी और खाना पकाने के बर्तनों को मामूली रकम पर उधार देने वाले ये बर्तन बैंक दरअसल गांवों में सिंगल यूज प्लास्टिक (एसयूपी) पर प्रतिबंध से पैदा होने वाली दिक्कतों का समाधान है। स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की स्वछाग्रही महिलाओं ने स्टील की प्लेट और गिलास के साथ-साथ खाना पकाने के बर्तन खरीदने का उपाय निकाला, जिसे लोग शादी या अन्य पारिवारिक कार्यक्रमों के लिए उधार ले सकते हैं और काम खत्म हो जाने के बाद उन्हें नाममात्र के शुल्क के साथ बैंक को वापस कर सकते हैं।

शाजापुर में महिलाओं ने प्लास्टिक के खिलाफ मोर्चा संभाला

ग्रामीण क्षेत्रों में तीन अवधारणाओं (उपयोग घटाने, दोबारा प्रयोग में लाने और पुनर्चक्रण) पर आधारित प्लास्टिक के उपयोग को घटाने का एक शानदार घरेलू उपाय प्रस्तुत करते हुए मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले के महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) प्लास्टिक के खिलाफ लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनका यह प्रयास स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण (एसबीएम-जी) के दूसरे चरण की भावनाओं के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य गांवों को स्वच्छ बनाने के लिए खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) की स्थिति को बनाए रखना और ठोस एवं तरल कचरे का कारगर तरीके से प्रबंधन करना है।

स्वच्छ भारत मिशन को प्रारंभ हुए लगभग 10 वर्ष पूरे हो चुके हैं। अभियान की सफलता इसी बात से लगाई जा सकती है कि आज देश में 73.62 लाख शौचालय (67.1 लाख घरेलू शौचालय और 6.52 लाख सामुदायिक एवं सार्वजनिक शौचालय) बनाकर लाखों शहरी गरीबों को सम्मान और स्वास्थ्य प्रदान किया है।

स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के तहत सभी राज्यो, केंद्र शासित प्रदेशो में 11 करोड़ से अधिक शौचालय और 2.23 लाख सामुदायिक स्वच्छता परिसर बनाये गए हैं।

अत: खुले में शौच मुक्त गाँवों में 50 प्रतिशत की उपलब्धि हासिल की है। लगभग 3 लाख गाँवों ने खुद को खुले में शौच मुक्त घोषित किया। 2024-25 तक एसबीएम जीचरण-II लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सौदेद्श्यपूर्ण विधि का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का समग्र : इंदौर जिले की समग्र कामकाजी माहिलाओं का अध्ययन है।

अध्ययन की इकाई : अध्ययन की इकाई के अंतर्गत इंदौर जिले की कामकाजी महिलायें हैं।

अध्ययन का क्षेत्र : मध्यप्रदेश के इंदौर जिले का चयन किया गया है।

निदर्शन का आकार : इंदौर जिले की कुल 100 महिलाओं का चयन किया गया है।

प्राथमिक समंक : साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन, समूह चर्चा।

द्वितीयक समंक : पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रलेख, सांख्यकीय जनगणना, इन्टरनेट आदि की सहायता से किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य : कामकाजी महिलाओं में सशक्तिकरण स्थिति का अध्ययन करना।

परिणाम एवं परिचर्चा

तालिका क्रमांक 1

महिला उत्तरदाता के कार्य से आय तथा खर्च संबंधित विवरण

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1ण्	हाँ	80	80%
2ण्	नहीं	20	20%
	कुल योग	100	100%

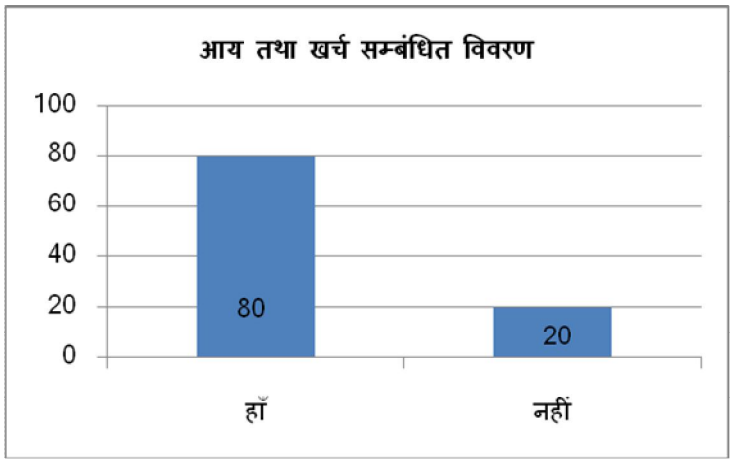

उपर्युक्त तालिका के समंको के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र मे 20 प्रतिशत महिलाओं के कार्य करने से उनकी आय, उनके खर्च का जरिया नहीं बन पाया है तथा 80 प्रतिशत महिलाओं का बन पाया है।

तालिका क्रमांक : 2

महिला उत्तरदाता को शिक्षा के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा निखारने संबंधित विवरण

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	80	80%
2	नहीं	20	20%
	कुल योग	100	100%

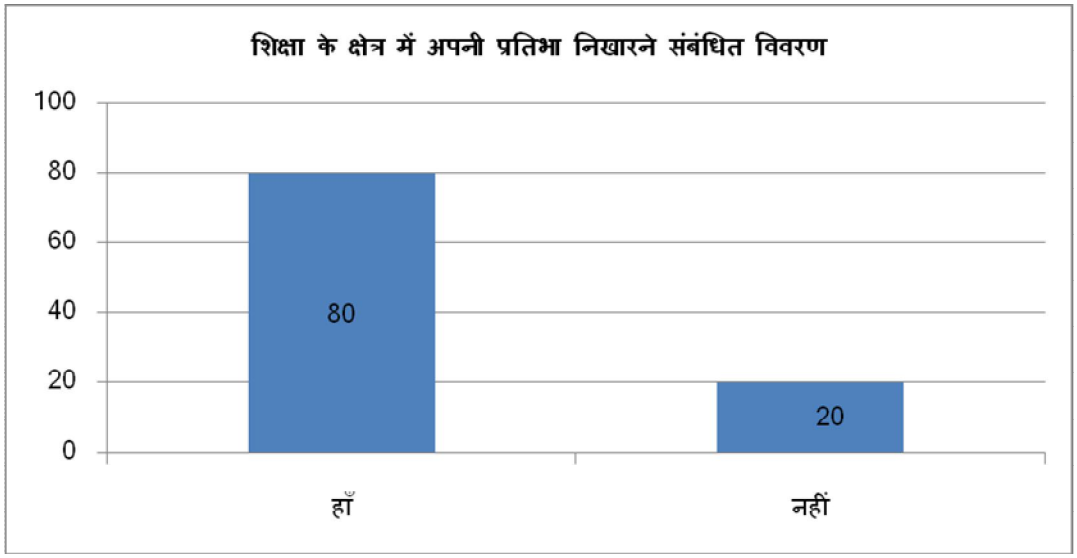

उपर्युक्त तालिका के समंको के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 20 प्रतिशत महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर नहीं मिल पाता है तथा 80 प्रतिशत महिलाओं को अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर मिल पाता है।

तालिका क्रमांक : 3

महिला उत्तरदाता के बदलते विकास में सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक सहभागिता संबंधित विवरण

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	75	75%
2	नहीं	25	25%
	कुल योग	100	100%

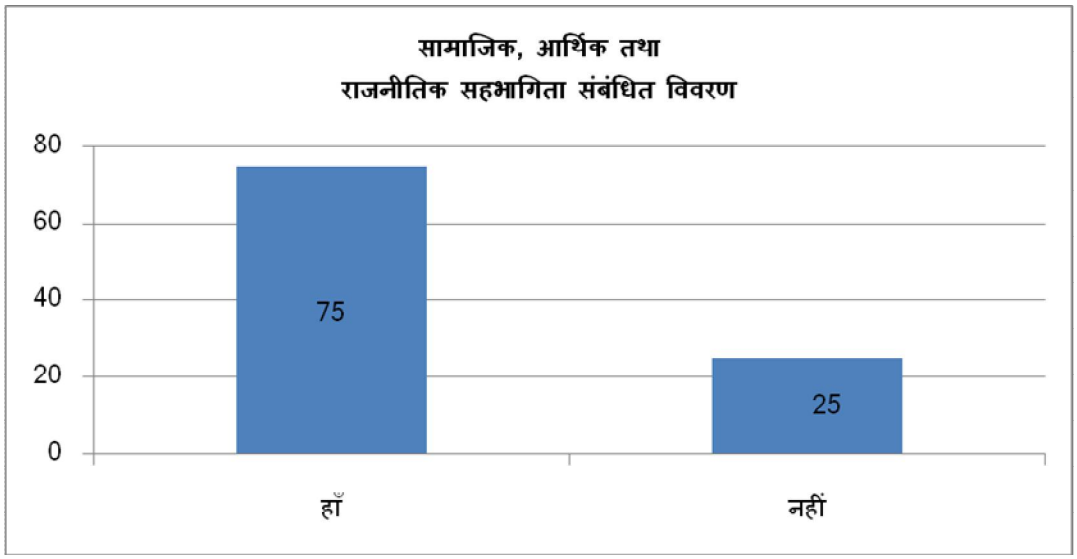

उपर्युक्त तालिका के समंकों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 75 प्रतिशत महिलायें बदलते विकास में सामाजिक-आर्थिक तथा रजनीतिक सहभागिता निभाने में सफल रही हैं तथा 25 प्रतिशत महिलायें अपनी सहभागिता नहीं निभा पा रही हैं।

तालिका क्रमांक : 4

महिला उत्तरदाता द्वारा आत्मनिर्भर तथा सशक्तता संबंधित विवरण

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	85	85%
2	नहीं	15	15%
	कुल योग	100	100%

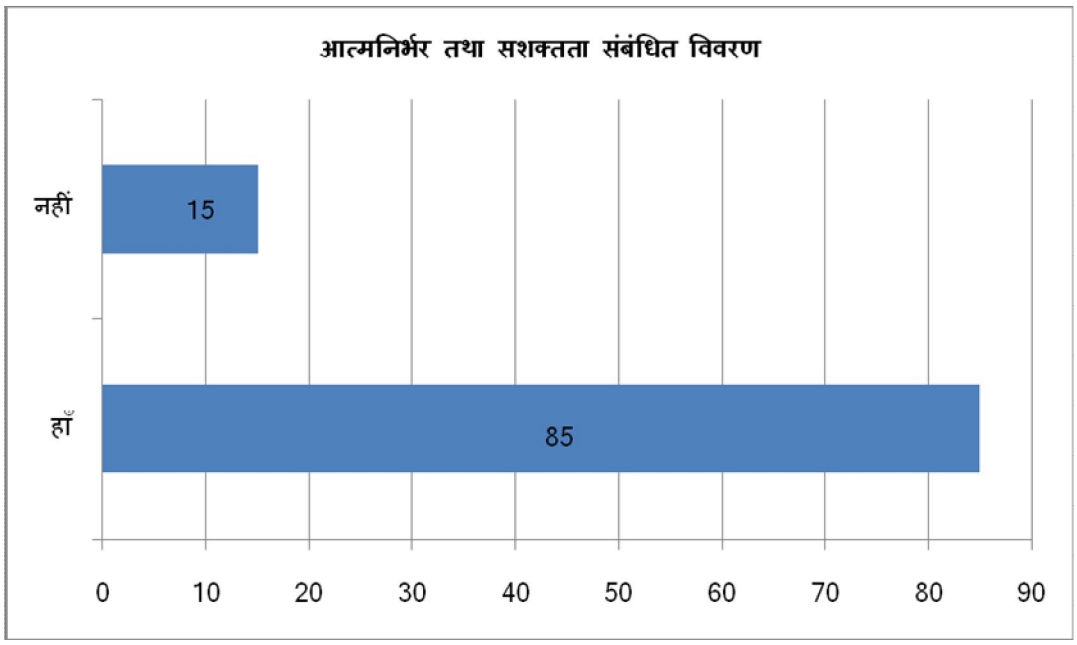

उपर्युक्त तालिका के समंकों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 85 प्रतिशत महिलायें आत्मनिर्भर तथा सशक्त हैं तथा 15 प्रतिशत महिलायें आत्मनिर्भर तथा सशक्त नहीं हैं।

तालिका क्रमांक : 5

महिला उत्तरदाता को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी संबंधित विवरण

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	90	90%
2	नहीं	10	10%
	कुल योग	100	100%

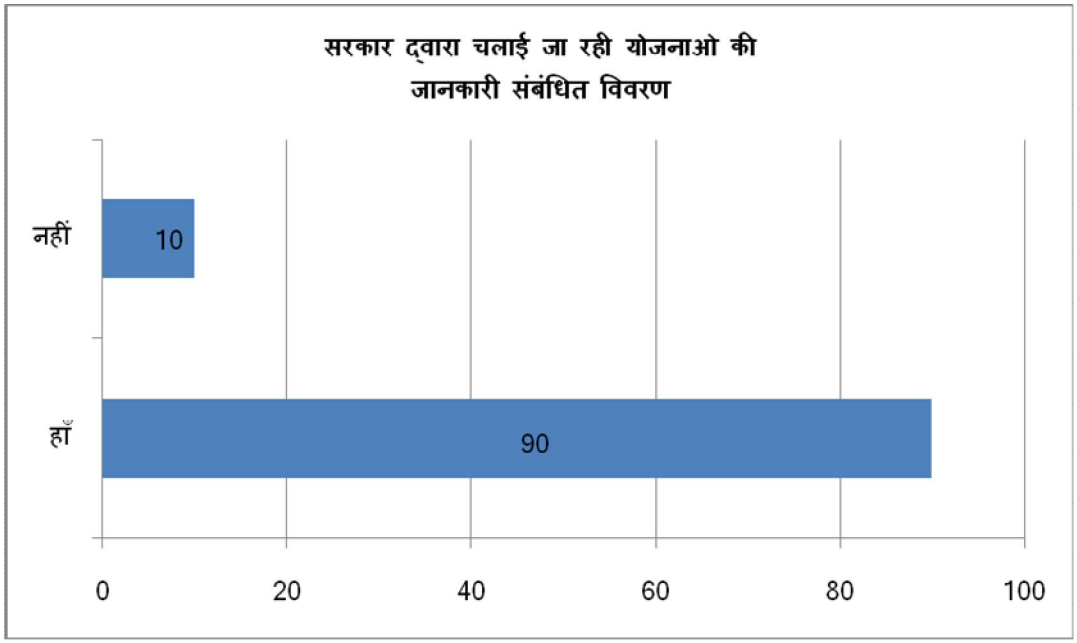

उपर्युक्त तालिका के समंकों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 90 प्रतिशत महिलाओं को महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी है तथा 10 प्रतिशत महिलाओं को जानकारी नहीं है।

निष्कर्ष

जिस तरह से भारत आज दुनिया के सबसे तेज आर्थिक विकास दर को प्राप्त करने वाले देशो में शामिल हुआ है उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिलाओं को अधिकाधिक सशक्त करने पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। स्वच्छ भारत अभियान ने कामकाजी महिलाओं को सशक्त किया है। स्वच्छता के विचार से अनेक उपलब्धियों को हासिल किया गया है। महिला अस्मिता की रक्षा के साथ उन्हें स्वाभिमान से जीवन व्यतीत करने का वातावरण उपलब्ध हुआ है। स्वच्छ भारत अभियान के विविध आयामों ने महिलाओं को सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से सशक्त किया है।

सुझाव

1 भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का एक और मुख्य कारण भुगतान में असमानता भी है। एक अध्ययन में सामने आया है कि समान अनुभव और योग्यता के बावजूद भी भारत में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम भुगतान किया जाता है। मेरा सुझाव है कि उन्हें भी पुरुषों के समान ही भुगतान किया जाना चाहिए।

2 स्वच्छता और पोषण द्वारा बालिकाओं के अच्छे स्वस्थ को सुनिश्चित करना और इस पर एक वृहत किन्तु ठोस दृष्टीकोण अपनाना लैंगिक असमानता को दूर करने के लिए आवश्यक है।

3 सूचना, शिक्षा और संचार आदि के द्वारा जनता के व्यवहार में परिवर्तन लाना स्वच्छ भारत मिशन की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

4 स्वच्छ भारत मिशन में लैंगिक ढाँचे के विकास को बहुत से शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों ने महत्वपूर्ण माना है। अत: एक सुनिश्चित ढाँचे का विकास अत्यंत आवश्यक है।

5 स्वच्छ भारत मिशन में लैंगिक परिणामों पर नजर रखने और उनकी वास्तविक स्थिति जानने के लिए एक राष्ट्रीय निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 (डॉ.) शुक्ल अरविंद (2016), स्वच्छ भारत अभियान : चुनौतियां एवं अवसर, प्रथम संस्करण, कानपुर, आराधना ब्रदर्स

2 वाल पेपर डॉ. सोनी (2003), संचार अनुसंधान, जयपुर, विश्वविद्यालय प्रकाशन

3 (डॉ.) खान एम.वी.वर्मा, पी. (2016), स्वच्छ भारत अभियान का पंचायत ग्राम अलोचात्मक विशलेषण

4 निष्ठा अनुश्री (28 जून 2019), स्वच्छ भारत अभियान से स्वस्थ भारत, कुछ डेटा कुछ अनुमान

5 स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय, एक पुस्तिका

6 विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र, (2018), स्वच्छ भारत सर्वेक्षण - 2017, रिपोर्ट

7 टी.के. आदनवाला (1986) भारतीय नारी के लिए पाठ्य पुस्तक एन.आर. ब्रदर्स प्रकाशन इंदौर

8 Dandikar, Hemalata (1986). Indian Women's Development: Four Lenses, south Asia Bulletin, V1(1), 2-10. Delhi.

9 Dr. Dasarati Bhuyan(2006) "Empowerment of Indian Women: A Challenge of 21st Century" Orissa Review.

10 Handy, F.,& Kassam, M. (2004), Women's empowerment in rural India. Paper presented at the ISTR conference, Toronto Canada.